ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)-८४८१२५

बुलेटिन संख्या-३८
दिनांक- मंगलवार, ०९ जून, २०२०

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेद्यशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः ३३.० एवं १८.६ डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता ७० प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में ४० प्रतिशत, हवा की औसत गति ८.० कि०मी० प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण २.२ मि०मी० तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन ८.१ घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा ५ से०मी० की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में २७.६ एवं दोपहर में ३२.७ डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(१०-१४ जून, २०२०)

- ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०यू०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी १०-१४ जून तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः-
- अगले १-२ दिनों तक मौसम के आमतौर पर शुष्क रहने की संभावना है। हालाकि उसके बाद वर्षा की संभावना में बढ़ोतरी हो सकती है, जिसके चलते तराई तथा मैदानी भागों के जिलों में हल्की वर्षा हो सकती है। मधुबनी, दरभंगा एवं सीतामढ़ी जिलों में कहीं-कहीं मध्यम वर्षा होने की संभावना है।
- इस अवधि में अधिकतम तापमान ३२ से ३५ डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान २२-२७ डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है।
- पूर्वानुमानित अवधि में औसतन १०-१४ कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से अगले दो दिनों तक पूरवा हवा तथा बीच में एक दिन पछिया हवा तथा उसके बाद फिर से पूरवा हवा चलने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में ६५ से ७० प्रतिशत तथा दोपहर में ३० से ४० प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- गन्ना फसल में अभी गलित शिखा रोग (Top rot disease) के प्रकोप की संभावना है। इस रोग से लगभग २.० से २२.५ प्रतिशत तक एवं उग्र अवस्था में ८० प्रतिशत तक उपज एवं ११.८० से ६५.० प्रतिशत तक की चीनी की मात्रा में कमी हो जाती है, जिससे किसान एवं चीनी मिलों का काफी हद तक नुकसान सहना पड़ता है। बिहार के वातावरण में इस रोग को वृद्धि हेतु तापक्रम २४-२८ डिग्री सेल्सियस, नमी ७५-८५ प्रतिशत एवं ७००-१००० मि०मी० वर्षा उपयुक्त पाया गया इस रोग से अक्रांत पौधे के शीर्ष भाग की पत्तिया घुमावदार हो जाती है तथा अक्रांत बिन्दु से पत्तिया टूटकर नीचे झुक जाती है एवं पौधों की वृद्धि विन्दु सड़ जाती है एवं पौधे की बढ़वार रुक जाती है। गन्ना फसल पर इस रोग का लक्षण दिखाई देने पर कार्बन्डाजीन (फफूँदनाशी) का ०.१ प्रतिशत दवा कों १ लीटर पानी में घोलकर १५ दिनों के अन्तराल पर तीन बार छिड़काव करने से रोग वृद्धि में कमी होती है।
- लीची तोड़ने के बाद लीची के बगीचों की जुताई कर खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग करे। प्रति प्रौढ़ पेड़ ६० से ८० किलोग्रम कम्पोस्ट अथवा गोबर की सड़ी खाद, २.५ किलोग्रम यूरिया, १.५ किलोग्रम सिंगल सुपर फॉसफेट, १.३ किलोग्रम म्युरेट ऑफ पोटाश तथा ५० ग्राम सुहागा के मिश्रण को बृक्ष के पूरे फैलाव में समरुप बिछा कर मिट्टी में मिला दें।
- जो किसान भाई अब तक हल्दी एवं अदरक की बुआई नही किये हैं, वे अतिशीघ्र बुआई सम्पन्न करें। हल्दी की राजेन्द्र सोनिया, राजेन्द्र सोनाली किस्में तथा अदरक की मरान एवं नदिया किस्में उत्तर बिहार के लिए अनुशंसित है। हल्दी के लिए बीज दर २० से २५ क्विंटल प्रति हेक्टेयर तथा अदरक के लिए १८ से २० क्विंटल प्रति हेक्टेयर रखें। बीज प्रकन्द का आकार ३०-३५ ग्राम जिसमें ३ से ५ स्वस्थ कलियाँ हो। रोपाई की दुरी ३० ग२० से०मी० रखे। बीज को उपचारित करने के बाद बुआई करे।
- मध्यम अवधि के धान के किस्मो को बीजस्थली में गिराने का काम करे। इसके लिए संतोष, सीता, सरोज, राजश्री, प्रभात, राजेन्द्र सुवासनी, राजेन्द्र कस्तुरी, राजेन्द्र भगवती, कामिनी, सुगंधा किस्में अनुशंसित है। एक हेक्टेयर क्षेत्रफल में रोपाई हेतु ८००-१००० बर्ग मीटर क्षेत्रफल में बीज गिरावें। नर्सरी में क्यारी की चौराई १.२५-१.५ मीटर तथा लम्बाई सुविधा अनुसार रखें। बीज को गिराने से पहले बविस्टिन २.० ग्राम प्रति किलोग्राम की दर से बीजोपचार करें।
- खरीफ प्याज की नर्सरी (बीजस्थली) गिरावें। छोटी-छोटी उथली क्यारियों जिसकी चौड़ाई एक मीटर एवं लम्बाई सुविधानुसार रखें। बीज को पंक्तियों में गिरावें। नर्सरी में जल निकास की व्यवस्था रखें। एन०-५३, एग्रीफाउण्ड डाक रेड, अर्का कल्याण, भीमा सुपर खरीफ प्याज के लिए अनुशंसित किस्में है। बीज गिराने के पूर्व बीज को केप्टन या थीरम@ २ ग्राम प्रति किलो बीज की दर से मिलाकर बीजोपचार कर लें। बीज की दर ८-१० कि०ग्रा० प्रति हेक्टेयर रखें। बीज प्रमाणित स्त्रोत से खरीदकर ही लगावें।
- बरसाती सब्जियाँ जैसे- भिंडी, लौकी, नेनुआ, करैला, खीरा की बुआई करें। इस मौसम में मिर्च की खेत में विषाणु रोग (पत्तियों का टेढ़ा-मेढ़ा होना) का प्रकोप अधिक देखने को मिलता है, इसके बचाव हेतु ग्रसित पौधे को उखाड़ कर जमीन में गाड़ दे तथा इमिडाक्लोप्रिड एक मी०ली० प्रति ३ लीटर पानी की दर से घोल बनाकर आसमान साफ रहने पर छिड़काव करें।
- मूंग, उरद की तैयार फलियों की तुड़ाई कर ले तथा हरी खाद हेतु उसके पौधों को मिट्टी पलटने वाले हल से जमीन में गाड़ दें।

आज का अधिकतम तापमानः ३५.० डिग्री सेल्सियस, सामान्य से १.५ डिग्री कम	आज का न्यूनतम तापमानः २०.८ डिग्री सेल्सियस, सामान्य से ५.० डिग्री कम

(डॉ० गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी

(डॉ० ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी